

# पानी की याददाश्त: एक बार फिर

**नो**बेल पुरस्कार विजेता लक मोन्टेनियर ने एक ऐसा प्रयोग करने का दावा किया है जिस पर पूरा विज्ञान जगत हतप्रभ है। संक्षेप में, प्रयोग का परिणाम यह बताता है कि डीएनए अणु लगातार विद्युत चुंबकीय तरंगों प्रसारित करता रहता है। ये विद्युत चुंबकीय तरंगें दूर रखे पानी के किसी नमूने को प्रभावित करती हैं और उस पानी में कुछ अतिसूक्ष्म संरचनाएं बन जाती हैं जो डीएनए की अनुकृति होती हैं। यदि इस पानी में वे एंजाइम हों, जो डीएनए का निर्माण करने के लिए ज़रूरी हैं तो उसमें डीएनए की वास्तविक प्रतिलिपि बन जाती है। सामान्यतः डीएनए की प्रतिलिपि बनाने के लिए पहले से मौजूद डीएनए के अणु का उपयोग सांचे के रूप में किया जाता है। अर्थात् मोन्टेनियर कह रहे हैं कि दूर रखे पानी में किसी रूप में यह सांचा बन जाता है।

वैसे अभी मोन्टेनियर का यह शोध पत्र प्रकाशित नहीं हुआ है मगर प्रयोग का मोटा-मोटा विवरण उन्होंने उजागर किया है। प्रयोग में किया यह गया था कि दो परखनलियों में पानी लेकर उन्हें एक दूसरे से थोड़ी दूरी पर रख दिया गया था। एक परखनली में डीएनए का एक खंड था। दोनों परखनलियों को तांबे की एक कुंडली के अंदर रखा गया था, जिसमें अत्यंत दुर्बल विद्युत चुंबकीय क्षेत्र निर्मित किया गया था। इस पूरे उपकरण को पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र से बचाने की व्यवस्था भी थी। करीब 16-18 घंटे बाद दोनों परखनलियों में रखे पानी में पोलिमरेज़ श्रृंखला क्रिया करवाई

गई। पोलिमरेज़ श्रृंखला क्रिया डीएनए की प्रतिलिपियां निर्मित करने का एक तरीका है। मोन्टेनियर बताते हैं कि डीएनए की प्रतिलिपियां दोनों परखनलियों में बनी थीं जबकि दूसरी परखनली में तो शुद्ध पानी होना चाहिए था।

इस प्रयोग का आशय यह है कि डीएनए निर्माण सम्बंधी जानकारी 'दूर-संप्रेषण' के ज़रिए एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंच जाती है। यह प्रयोग 1988 में जेकेस बेनेविस्टे द्वारा किए गए उस प्रयोग की याद दिलाता है जिसमें बेनेविस्टे ने साबित किया था कि पानी उसमें घुले पदार्थों की संरचना को तब भी याद रखता है जब वह पदार्थ पूरी तरह वहां से हटा लिया जाए। इसके आधार पर बेनेविस्टे ने होम्योपैथी की व्याख्या करने की कोशिश की थी मगर उनका प्रयोग अंततः डिज़ाइन की खामियों से ग्रस्त पाया गया था।

मोन्टेनियर ने अभी प्रयोग की पूरी जानकारी नहीं दी है मगर में हलचल शुरू हो गई है। अधिकांश वैज्ञानिकों ने सवाल उठाए हैं, मगर एक बात पर सभी सहमत हैं कि यदि मोन्टेनियर के प्रयोग वाकई सफल हुए हैं, तो ये हमारी सारी धारणाओं को हिला देने की क्षमता रखते हैं। लगभग सभी वैज्ञानिक मान रहे हैं कि अन्य समूहों द्वारा इन प्रयोगों को दोहराने की ज़रूरत है ताकि पहले तो परिणामों पर कुछ कहने की स्थिति बने। उसके बाद ही इसके निहितार्थों पर गौर करना लाज़मी होगा। (**स्रोत फीचर्स**)